eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

समकालीन कविता और पर्यावरण चेतना

डॉ0 मंजुला श्रीवास्तव[1]
[1]असि0 प्रो0– हिन्दी विभाग, दयानंद गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उ0प्र0

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

कविता मनुष्य के सौन्दर्यबोध की सर्वोत्तम सफल अभिव्यक्ति है कविता निश्चय ही हमारे अन्तः करण की अमिट सौन्दर्य सृष्टि है। कविता का जैविक सम्बन्ध मानव के जीवन से होता है। उसके जीवन से ऊर्जा पाकर ही कोई भी महान कवि कविताओं का सृजन करता है। हिन्दी के समकालीन कवियों में ऐसे अनेक कवि हैं, जिन्होंने सामयिक जिन्दगी को अत्यन्त बारीकी से पकड़कर कविताओं का सृजन किया है। 'समकालीनता' वास्तव में अपने समय का महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ उलझना है, जो वर्तमान सत्य होता है। विश्व की सभी भाषा के कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति सौन्दर्य के वैविध्यमय रूपों के अनगिनत चित्र उकेरे हैं। उसे कभी दृष्टान्त, उदाहरण, अन्योक्ति, रूपक, यमक तथा अन्य अलंकारों उपमानों के रूप में प्रयुक्त किया है, तो कभी आलम्बन, उद्दीपन के रूप में। प्रकृति सदैव काव्य का एक अनिवार्य उपादान रही है। कविता के समस्त बिम्बों, चित्रणों में प्रकृति आलम्बन अथवा उद्दीपन विभाव के रूप में उपस्थित रही है, इसलिए कविता और प्रकृति का यही रूप अब तक हमारे लिए परिचित रहा है।

बीज शब्द :– समकालीन, कविता, चेतना, पर्यावरण, प्रकृति, वैश्वीकरण, क्षरण, दोहन।

Introduction

20वीं सदी ईस्वी के उत्तरार्ध की कविता में पहली बार प्रकृति इससे भिन्न रूप में उपस्थित हुई है। वह सन्दर्भ है उसका पर्यावरणीय रूप, जिसमें प्रकृति मात्र सौन्दर्यानुभूति की आलम्बन, उद्दीपन अथवा उपमान–प्रतिमान न होकर स्वयं एक विषय वस्तु है। प्राकृतिक पर्यावरण हमारे अस्तित्व का आधार है। वह हमारे भीतर भी और हमारे चारों ओर भी। वह हमारे जगत जीवमात्र के होने न होने का सबसे प्रमुख कारक है। वह अक्षुण्ण और सुरक्षित है तो पृथ्वी का जीवन सुरक्षित है। उसकी सुरक्षा का क्षरण पृथ्वी के जीवन का क्षरण है। प्रकृति के इस आसन्न संकट के लिए प्रमुख रूप से मनुष्य ही उत्तरदायी है। यह बात 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक संसार के प्रमुख चिन्तकों को समझ में आने लगी। मानव समाज की भौतिक प्रगति, वैज्ञानिक उन्नति तथा उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति से एक ओर प्रकृति का अंधाधुध दोहन होने लगा, दूसरी ओर उसका निष्कलुष रूप प्रदूषित और असंतुलित होने लगा। इसके दूरगामी भयावह परिणामों के प्रति चिंता ने पर्यावरण संरक्षण के आन्दोलनों को जन्म दिया। पर्यावरण चिंतक अपने–अपने स्तर से इस ओर प्रयासरत हुए। पर्यावरण चिंतन के विभिन्न क्षेत्रों में से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र साहित्य है, जो शब्द रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण के प्रति सामाजिक चेतना जाग्रत करता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में पर्यावरण काफी चिन्ता का विषय है। प्रकृति के असंतुलित दोहन का भीषण परिणाम मानव जाति किसी न किसी रूप में भोग रही है। समकालीन कविता में कई कवि इस आशंका को अभिव्यक्त करते हैं। मानव निर्मित पारिस्थितिक समस्यायें अब ज्यादा हैं। ऐसी आशंका नवल शुक्ल की कविता 'खड़े–खड़े देखेगें' में अभिव्यक्त हुई है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

खड़े–खड़े देखेंगे
खेतों में बनते
बड़े–बड़े पहाड़
कहीं दूर जाते खनिज
गिने चुने पेड़
असमय उड़ती चिड़िया।

ऐसी स्थिति में सभी चीजें धरती से विदा ले रही हैं। हवा, पानी, पेड़–पौधे, नदियां, फूल, जीव आदि गायब हो रहे हैं इस धरती से। इसीलिए एकान्त श्रीवास्तव को लगता है कि (इस संसार की जलवायु में)

ऋतुओं की महक घिर गई है

केमिकल्स की गन्ध से

श्रीवास्तव की तरह बलदेव वंशी भी अपनी चिन्ता 'तेजाबी वर्षा' में इस तरह व्यक्त कर रहे हैं–

बरस रहीं मरीं मछलियाँ

बादलों से कभी

बरसता तेजाबी जल और

धरती आवाक/असमर्थ/अमृत कोख भी

विष पचाने में.....

पेट में पड़े तुम्हारे नये उत्पाद

रसायनों के नये समीकरण

प्लास्टिक के रूप–अरूप।

ये काव्य पंक्तियां पर्यावरण के प्रति हमारी वर्तमान चिन्ताओं को और गम्भीर बनाती हैं। यह युग समकालीन कविता का है, वैश्वीकरण का भी। दोनों सच है। वैश्वीकरण के इस युग में विकास की अवधारणायें बेहद खतरनाक हैं। ये अवधारणायें विकास के नाम पर पर्यावरण का विनाश करती हैं और प्रकृति का दोहन करती हुयी उसे निरंतर रौंदती रहती हैं। इसलिए ''प्रकृति ही जीवन में सृजनात्मकता की मां है। उसे उजाड़ना या दास बनाना जीवन की सहजता को तोड़ना है।''

समकालीन कविता प्रकृति के रूप रंग वैविध्य के आकर्षण में डूबे हुए प्रकृतिवादी की कविता नहीं है, बल्कि प्रकृति के मूलतत्व और उसके भीतर निहित विश्वशक्ति की पहचान कराने वाले कवियों की कविता है। प्रकृति पर रचित समकालीन कवियों की छोटी–बड़ी कवितायें जिस प्रकृति को हमारे भीतर जीवंत करती है वह दुर्लभ है। वे प्रकृति के रूप वर्णन में व्यस्त होने के स्थान पर उसके स्पंदन को सुनते और सुनाते हैं। हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना के प्रथम प्रमुख कवि भवानी प्रसाद मिश्र हैं उन्होंने प्रकृति के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

पर्यावरणीय महत्व को पहचानते हुए सर्वप्रथम उसके अवैज्ञानिक अस्वाभाविक दोहन तथा विविध प्रकार के प्रदूषणों द्वारा उसका असंतुलन बढ़ाने के प्रति सावधान किया है।

हम प्रकृति से टूट गये हैं

जिस डाली को पकड़े थे हमारे हाथ

उससे हमारे हाथ छूट गये हैं।

और अब हम एक गति में हैं

ज्यादातर लोग समझ रहे हैं

हम प्रगति में हैं।

(परिवर्तन जिये, 49)

कवि को कष्ट है कि प्रकृति से दूरी बढ़ाते–बढ़ाते मनुष्य अपने लिए नये संकट उत्पन्न कर रहा है। जिसे वह प्रगति समझ रहा है, वास्तव में वह सच्ची प्रगति नहीं है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों तथा औद्योगीकरण के उत्पादों ने जितनी तीव्रता से मानव सभ्यता को आगे बढ़ाया उतनी ही तेजी से प्राकृतिक पर्यावरण का असंतुलन भी बढ़ा है। इसी के परिणाम स्वरूप पृथ्वी के समस्त जीवों का अस्तित्व संकटग्रस्त हो गया। जनसंख्या के बढ़ते दबाव से प्राकृतिक संसाधन नष्ट होते गये। यांत्रिक उपकरणों के अत्यधिक प्रयोगों में प्रयुक्त होने वाले तथा उनसे उत्सर्जित होने वाले हानिकारक रसायनों ने वातावरण को विशाक्त बना दिया। भूमण्डलीय तापवृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन के संकट लिए मानव की ये प्रवृत्तियाँ भी कम उत्तरदायी नहीं हैं।

कहीं नहीं बचे हरे वृक्ष

न ठीक सागर हैं न नदियां

कहीं नहीं बचा चमकता सूरज

चाँदनी उछालता चाँद।

(परिवर्तन जिये, 106)

समकालीन कवि समाज को निरंतर सचेत करता है और इस बात का बोध भी कराता है कि पर्यावरण को प्रदूषित और असंतुलित बनाने के लिए मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है।

धरती की माटी अगर

पलीत होती जा रही है

पानी की छाती अगर

भयभीत होती जा रही है

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

या साफ–सुथरी हवा

ज्यादा जहरीली मौत की किसी घाटी से

तो यह सब हमारा फैलाया हुआ जाल है।

(अनाम.....100)

अत्यधिक आधुनिक बनने की होड़ के कारण मनुष्य अपने ही फैलाये जाल में फँसता जा रहा है। अत्यधिक भोग की प्रवृत्ति ने उसके मानस के उदात्त मूल्यों को पोंछ डाला है। इसीलिए व्यक्ति रहन–सहन ही नहीं, उसकी वैचारिकता और चिंतन शक्ति भी बदलती जा रही है। यही कारण है कि दिन–प्रतिदिन जन–जीवन में गम्भीरता के स्थान पर उथलापन और आडम्बर छाता जा रहा है। इसीलिए कवि लिखता है.

पक्के घरों में रहने वाले

पक्के आदमियों ने

सिवा विचारों के

सबकुछ पक्का रखा है। (खुशबू के शिलालेख.....141)

और कभी लिखता है–

लेना–देना आपस में

न चीजों का है, न विचारों का है

वे चीज ले लेते हैं

बाजारों से

विचार लेते हैं अखबारों से।

(खुशबू के शिलालेख....140)

इस प्रकार समकालीन कवियों ने पर्यावरण की दुर्दशा का एक कारण वैचारिक खोखलापन माना है। प्रकृति के प्रति उसकी संवेदनहीनता को आज के इस भीषण प्रदूषण और अंसतुलन के लिए जिम्मेदार माना है। हमने प्रकृति से सिर्फ लिया है, उसके हित में किया कुछ नहीं। ऐसा आचरण वैचारिक शून्यता का परिणाम है।

इसी प्रकार उत्तर आधुनिक सभ्यता पर टिप्पणी करते हुए कवि मानिक बच्छावत लिखते हैं–

जब भी तुम चाहते हो

मैं फल देता हूँ

चिलचिलाती धूप में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

छांह

घर के लिए तन देता हूँ

मरने पर तुम्हारे साथ जलता हूँ

पेड़ हूँ तुम्हारे लिए जीता हूँ।

इन काव्य पंक्तियों में कवि ने पेड़ की जीवनशक्ति और मनुष्य के प्रति समर्पण वृत्ति का अंकन किया है लेकिन जो मूल चिन्ता है इस कविता के केन्द्र में वह है कि पेड़ों का काटना, पर्यावरण का असंतुलित होना और प्रकृति के प्रति मनुष्य का उदासीन होना। जो वर्तमान पर्यावरणीय त्रासदियों के लिए पूर्णतः जिम्मेवार है।

वस्तुतः हिन्दी कविता ने प्रकृति वर्णन को अपने अभिन्न अंग की तरह अपनाया है और युगानुरूप उसका रूप गढ़ा या उसके जरिए मनुष्य को विविधांगी रूप में साकार किया। प्रतीक, बिम्बों में उसे गढ़ा। विचारों–भावों में उसे गूंथा। लेकिन पर्यावरण रक्षा के विचारों में गूँथी ये कविताएँ अपने आप में अनूठी हैं।

पृथ्वी के पर्यावरण को बचाने का संकल्प हिन्दी कविता में सदैव गूंजता रहेगा :

सुगन्धे लिखूँगा/सुगन्धे गाऊँगा धूल और धूएँ आकाश में

वह भले ही निराशा और कोलाहल और कुंठा से भरा हो।

(खुशबू के शिलालेख.... 122)

सन्दर्भ :

1. नवल शुक्ल–खड़े–खड़े देखेगें–सन्दर्भ–सम्मेलन पत्रिका, प्रकाशक– साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद
2. एकान्त श्रीवास्तव इस संसार में जलवायु में– सन्दर्भ–सम्मेलन पत्रिका, प्रकाशक–साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद
3. बलदेव वंशी– तेजाबी वर्शा सन्दर्भ–सम्मेलन पत्रिका, प्रकाशक– साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद
4. भवानी प्रसाद मिश्र परिवर्तन जिये, सरला प्रकाशन दिल्ली 1977
5. भवानी प्रसाद मिश्र अनाम तुम आते हो, सरला प्रकाशन दिल्ली 1976
6. भवानी प्रसाद मिश्र खुशबू के शिलालेख, सरला प्रकाशन दिल्ली 1973
7. कवि मानिक बच्छावत– फूल मेरे साथ हैं–सन्दर्भ–समकालीन हिन्दी कविता की नयी सोच–डॉ० पद्मजा घोरपड़े, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली
8. वागर्थ–2010 संपादक, विजय बहादुर सिंह भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता